P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-12* August- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दूरस्थ शिक्षा की सफलता के प्रमुख सोपान : गुणवत्ता पूर्ण शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श

Steps Leading To The Success of Distance Education: Quality Complete Educational Guidance and Counseling

Paper Submission: 12/08/2020, Date of Acceptance: 25/08/2020, Date of Publication: 26/08/2020

अनिल कुमार
प्रवक्ता,
एस0बी0वी0आई0 कालेज,
मुरारमउ, रायबरेली,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

आज वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में दूरस्थ शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। दूरस्थ शिक्षा सामान्य एवं निम्न स्तर का जीवन यापन करनें वाले लोगों के एवं सेवारत पुरूष एवं महिलाओं के लिए एक उपयोगी शिक्षा पद्धति है। दूरस्थ शिक्षा तो आज की आवश्यकता एवं कल का भविष्य है। शिक्षा संस्थानों की स्थापना राष्ट्र की शैक्षिक आवश्यकता व गुणवत्ता के मानकों पर आधारित होनी चाहिए। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक निर्देशन एक आवश्यक उपागम है। यदि सरकार एवं दूरस्थ शिक्षा प्रदान करनें वाले संस्थान दोनो मिलकर गुणवत्ता को अपने मानस पटल पर रखकर विधिवत शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श का कार्य करेंगे तो इस दिशा में एक प्रभावी समझ पैदा हो सकेगी। साथ ही परामर्शदाताओं का सशक्तीकरण किया जाना भी आवश्यक है जिसमें बैठक, संगोष्ठी, कार्यशाला समूह चर्चा, व्याख्यान, सम्भाषण आदि प्रविधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

Today, distance education has an important place in global and national perspective. Distance education is a useful education system for people with normal and low standard of living and serving men and women. Distance education is the need of today and tomorrow's future. The establishment of educational institutions should be based on the educational need and quality standards of the nation. Educational direction is an essential approach in the field of distance education. If both the government and the institutions providing distance education work together and put the quality on their psyche, then they will be able to work in the direction of academic instruction and counseling, then an effective understanding will be created in this direction. It is also necessary to strengthen the counselors in which the methods of meeting, seminar, workshop group discussion, lecture, address etc. can be used.

मुख्य शब्दः शैक्षिक निर्देशन, परामर्श, प्रतिस्पर्धा अविर्भाव, अधिगमकता, सार्वभौमीकरण, पुनरावलोकन, गुणवत्तापरक, पृष्ठ पोषण, सशक्तिकरण ।

Educational Direction, Mentoring, Competition Orientation, Learning, Universalization, Review, Quality, Feedback, Empowerment.

प्रस्तावना

शिक्षा के विकास की प्रतिस्पर्धात्मक प्रक्रिया में शैक्षिक तकनीकी का प्रमुख स्थान है। भारत एक कृषि प्रधान एवं विकासशील राष्ट्र है, अतः यहाँ पर सामान्य एवं निम्न स्तर के जीवन यापन करने वाले लोगो की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है, अर्थात अधिकांशतः महिला एवं पुरूष अपने भरण पोषण के लिए रोजगार की तलाश में विद्यालय नियमित रूप से न पहुंच पाने के लिए मजबूर हो जाते है और विद्यालयी शिक्षा (औपचारिक शिक्षा) से उनका सम्बन्ध टूट जाता है। फलतः उनकी औपचारिक शिक्षा पूरी नहीं हो पाती। ऐसी स्थिति में औपचारिक शिक्षा के विकल्प के रूप में मुक्त शिक्षा या दूरस्थ शिक्षा का अविर्भाव हुआ जो वर्तमान समय के इस विकासोन्मुखी दौड़ में जीवन व्यतीत करने वाले औपचारिक शिक्षा से वंचित लोगो के के लिए वरदान सिद्ध हो रही है, क्योंकि इस शिक्षा पद्धति में पढ़ने वाले अर्थात अधिगमकर्ता का सम्पर्क नियमित रूप से

विद्यालय नही जा पाता है इसलिए उसको अपनी पढ़ाई में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इन समस्याओं के समाधान के लिए मुक्त शिक्षा या दूरस्थ शिक्षा, छात्र सहायता सेवाएं मुफ्त प्रदान करती है। ये छात्र सहायता सेवाएं विभिन्न प्रकार की होती है और विभिन्न प्रकार से प्रदान की जाती है जिससे अधिगमकर्ता अधिक मात्रा में लाभान्वित होते है।

दूरस्थ शिक्षा में सीखने वाले विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा, विषय चयन, निश्चित व निर्धारित समय सारिणी, विद्यालयी सीमा परीक्षा की कठोरता आदि बन्धनों से शिथिलता पाकर अपनी स्वेच्छा से विषय चयन करके अपनी सीमा व गति के अनुसार पढ़ाई करते है। इस शिक्षा व्यवस्था में छात्रों को पढ़ने के लिए मुद्रण सामग्री, आडियो कैसेट्स, आडियो वीडियो कैसेट्स, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर व सी.डी. आदि के साधन उपलब्ध हैं।

इस दूरस्थ शिक्षा को और भी नामों से जाना जाता है– मुक्त शिक्षा, पत्राचार शिक्षा, आजीवन शिक्षा, स्वतन्त्र शिक्षा, ई–लर्निंग, मोबाइल लर्निंग, वर्चुअल शिक्षा इत्यादि।

आज के परिप्रेक्ष्य में कोरोना संक्रमण के काल में दूरस्थ शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है इसमें ई–लर्निंग, मोबाइल लर्निंग, दूरदर्शन में स्वयं प्रभा चैनल एवं वर्चुअल शिक्षा आदि दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख उपागम है।

दूरस्थ शिक्षा का विकास

दूरस्थ शिक्षा जो कभी बहुत प्रचलित नहीं थी, आज नई तकनीक के साथ विश्व के कोने–कोने तक पहुंच रही है। डिग्री, डिप्लोमा, और प्रमाण पत्र पाठ्यक्रमों की लम्बी सूची है। ज्ञान–विज्ञान का शायद ही कोई कोना हो जो इसमें शामिल न हो, इस नजरिये से दूरस्थ शिक्षा भूमण्डलीकरण के इस दौर में शिक्षा की आवश्यकता बन गयी है। दूरस्थ शिक्षा न केवल शिक्षा के लोकतन्त्र एवं वैयक्तिक विकास की अवधारणा को बल दे रही है बल्कि शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य प्राप्ति में भी सहायक बन रही है। दूरस्थ शिक्षा के वैयक्तिक से लेकर वैश्विक संदर्भो का पुनरावलोकन करें तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि दूरस्थ शिक्षा एक स्वर्णिम भविष्य है। यदि वर्तमान परिवेश में हम इसके आवश्यकतापरक तथ्यों को गम्भीरता से देखें तो ऐसा लगता है कि शिक्षा सबके लिए है ऐसे पवित्र व आधारभूत संरचना को पूर्णता के पंख दूरस्थ शिक्षा के कारण से ही मिले है, निर्धन वर्ग, श्रमिक वर्ग, घरेलू महिलाओ के साथ–साथ सतत् शिक्षा का आवश्यकता वाले लोगों के लिए आज दूरस्थ शिक्षा अत्यन्त उपयोगी प्रतीत हो रही है।

यदि हम वर्तमान तथ्यों व आँकड़ो पर नजर डालते है तो स्पष्ट होता है कि चाहे विद्यालयी शिक्षा हो या उच्च शिक्षा हो दोनो में नामांकन स्तर की वृद्धि दूरस्थ या दूरवर्ती शिक्षा के कारण ही हो पायी है।

अनेक विशिष्ट अध्ययनों एवं डेलार्स कमीशन सहित अनेक विशिष्ट अध्ययनो के मुताबिक भारत की जनसंख्या के आकार एवं शैक्षिक आवश्यकताओं चलते 15000 विश्वविद्यालयी शिक्षा संस्थानो की आवश्यकता है। शैक्षिक संस्थानो की कमीं एवं मांग की अधिकता, शैक्षिक गतिशीलता, शैक्षिक स्वायत्तता, शैक्षिक लचीलापन, स्टेक होल्डर्स के अनकूल शिक्षा के वैधानिक प्राविधानो की आपूर्ति शिक्षा में दूर संचार तकनीकि की क्रान्ति एवं शिक्षा के लोकतांत्रिकरण तथा निजीकरण जैसे मुद्दो एवं लक्ष्यों की आपूर्ति हेतु दूरस्थ शिक्षा ऐ उपयुक्त उपागम है।

अपने महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के कारण आज दूरस्थ शिक्षा वैकल्पिक प्रणाली एवं पृथक शैक्षिक अनुशासन के रूप में वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय अवधारण बन चुकी है जिसके चलते ओपेन स्कूल, खुला विश्व विद्यालय तथा ऑन लाइन एजूकेशन जैसे नवीन एवं जनप्रिय शैक्षिक उपक्रम स्थापित हो गये है, जिन्होने न केवल अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक सरोकारों की आपूर्ति की है बल्कि आम जनता की आवश्यकता एवं परिस्थितियों के अनुकूल शिक्षा को पहुँचाकर एक प्रसन्नतापूर्ण पर्यावरण को जन्म दिया है।

जिसके चलते ओपन–स्कूल खुला विश्वविद्यालय तथा आनलाइन–एजूकेशन जैसे नवीन व जनप्रिय शैक्षिक उपक्रम स्थापित हो गये है, जिन्होने न केवल अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक सरोकारों की आपूर्ति की है, बल्कि आम जनता की आवश्यकता एवं परिस्थिति के अनुकूल, शिक्षा को पहुंचाकर, एक कल्याणकारी पर्यावरण को जन्म दिया है।

शिक्षा के सम्बन्ध में दूरवर्ती–शिक्षा की अवधारणा एवं तकनीक ने सचमुच ही देशकाल की सीमाओं को मिटा दिया है। इस कारण से भी शिक्षा के उपभोक्तावादी दृष्टिकोण को बल मिला है। आज अनेक विदेशी–विश्वविद्यालय, मान्य–विश्वविद्यालय, निजी विश्वविद्यालय सहित दूरस्थ–शिक्षा के राजकीय नियामक व केन्द्रीय संस्थान भी शिक्षा को आम जन की सम्पत्ति बनाकर, उसे उपभोक्तामुखी मोड़ देने में अहम भूमिका अदा कर रहे हैं।

विगत कुछ वर्षो से भारत में दूरवर्ती–शिक्षा की अवधारणा अनेक आरोपों, विवादों, विसंगतियों एवं अप्रबंधकीय कारको के मकड़जाल में फंसी हुई है– जानकारों का मानना है कि भारत में दूरवर्ती–शिक्षा को लेकर जो प्रदूषित पर्यावरण बना है, उसमें दूरवर्ती–शिक्षा की अवधारणा व प्रदाता संस्थानों का स्वरूप दोषी नहीं है, बल्कि शैक्षिक निर्देशन में कमीं, दिशापरक समझ, एवं आवश्यक परामर्श सूचना सेवाओं का अभाव, नियामक एवं नेतृत्वकारी संस्थानों में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं समन्वय की कमीं तथा अविवेकशील बाजारीकरण जैसे कारक उत्तरदायी हैं। इसी वजह से आज भारत में आज दूरस्थ–शिक्षा का मात्रात्मक दृष्टिकोण तो फलफूल रहा है लेकिन गुणात्मक पक्ष काफी चिंतनीय व कमजोर है।

इस सन्दर्भ में शिक्षाविदों का मानना है कि दूरस्थ–शिक्षा तो आज की आवश्यकता व कल का भविष्य है। इसलिए इस दिशा के आपूर्तिकर्ता शिक्षा संस्थानों की भविष्य में और भी अधिक आवश्यकता पड़ेगी, क्योंकि शैक्षिक उपागम निरन्तर वैयक्तिक विषय बनते जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में पूर्व राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन द्वारा 1948 मे दिये विचार आज भी सम–सामयिक है। उनके अनुसार '' वैयक्तिक विकास की आजादी लोकतंत्र का

आधार है, अतः शिक्षा संस्थानों की स्थापना राष्ट्र की शैक्षिक आवश्यकता व गुणवत्ता के मानकों पर आधारित होनी चाहिए, न कि राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए।''

जनसंख्या, ज्ञान, तकनीकी एवं जन अपेक्षाओं के विस्फोंटो के चलते 21वीं सदी की शिक्षा में नई दिशाओं एवं निजीकरण का उदय होना स्वाभाविक है। हो सकता है कि आने वाले समय में शिक्षा, व्यक्ति की आवश्यकता व उसके पूर्तिकर्ता संस्थान के मध्य तक का ही मामला न बन जाये। हो सकता है कि शिक्षा डिग्री–डिप्लोमा के स्वरूप से बाहर निकल कर गुणवत्तापक–संस्थान की ब्राण्ड इमेज का पर्याय ही बन जाये। इन सब विचारों के प्रकट करनें का मंतव्य यह है कि शिक्षा के विस्तार एवं निजीकरण को रोकना तो इस दिशा में, किसी भी प्रकार का समाधान नही है, बल्कि जाग्रत ज्ञान की गंगा को रोकने के समान ही होगा, यदि कुछ सुधार ही करना है, तो इस दिशा के तंत्र में आयी खामियों को दूर किया जाए, अर्थात गुणवत्तापरक शैक्षिक निर्देशन एवं सम्यक् परामर्श–सेवाओं से ही दूरस्थ–शिक्षा को अपना सही आकार मिल पायेगा।

दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक निर्देशन एक आवश्यक उपागम

शैक्षिक निर्देशन से आशय–''किसी लक्ष्यपरक क्रिया को मानकों एवं आदर्शों की कसौटी पर जाँचते हुए उसकी सतत् देख–रेख करने से है कि वह क्रिया लक्ष्योनुकूल है या नहीं, तदनुसार उसमें सतत् एवं सम्यक परिवर्तन करते रहने से है।'' प्रश्न यह उठता है कि दूरस्थ–शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक निर्देशन एक आवश्यक उपागम है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में संस्थानिक शैक्षिक निर्देशन तंत्र के साथ–साथ व्यापक स्तर पर सरकारी शैक्षिक निर्देशन तंत्र की भी आवश्यकता है। इस निमित्त सरकार द्वारा केन्द्रीय स्तर पर असमन्वयकारी पर्यावरण को दूर करते हुए, इस दिशा का एक विशिष्ट नियामक संस्थान बनाकर निम्न कार्यों के परिप्रेक्ष्य में सतत् शैक्षिक निर्देशन का कार्य करना चाहिए–

1. मान्यता के मानक निर्धारणीय कार्य
2. संचालन एवं गुणवत्ता के मानक निर्धारणीय एवं संसोधनीय कार्य।
3. सतत् निरीक्षण (गुणवत्ता अंकेक्षण, के परिप्रेक्ष्य में)
4. दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों के ग्रेड व स्तरों का निर्धारणीय व इस दिशा के सूचनात्मक कार्य।
5. पृष्ठपोषण एवं परामर्शीय कार्य।
6. प्रचार–प्रसार व जन सूचनात्मक कार्य।

उपर्युक्त सरकारी शैक्षिक निर्देशन कार्यों के अतिरिक्त दूरवर्ती–शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों को भी अपनी गुणवत्ता एवं ब्राण्ड इमेज को अक्षुण्ण बनाएं रखने के लिए निम्न शैक्षिक निर्देशन कार्यों को दिशा देनी चाहिए–

1. नियामक संस्थानों के निर्देशों एवं विद्यार्थियों के हितार्थ संस्थानिक मानक निर्धारित करना।
2. मुख्यालय द्वारा क्षेत्रीय केन्द्रों एवं अध्ययन केन्द्रों के साथ समन्वय एवं प्रभावी नियन्त्रण स्थापित करना।
3. दूरस्थ शिक्षा की उच्च गुणवत्ता निमित्त आवश्यक भौतिक संसाधनों को प्रबन्धित करना।
4. पाठ्यक्रम एवं सीखनें के उपागमों को प्रबन्धित करना।
5. विद्यार्थी समर्थन कार्यक्रम एवं सतत् परामर्शीय तंत्र की स्थापना करना।
6. सतत् मूल्यांकन एवं पारदर्शी परीक्षा प्रणाली की स्थापना करना।

यदि सरकार एवं दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान दोनो मिलकर गुणवत्ता को अपने मानस पटल पर रखकर विधिवत् शैक्षिक निर्देशन का कार्य करेंगे तो, जनता में अपने आप ही इस दिशा की सुलझी हुई समझ पैदा हो जायेगी।

परामर्श – दूरस्थ शिक्षा की एक सेवा प्रणाली

किसी समस्या के प्रति वृत्तिवान सलाह परामर्श कहलाती है। मानवीय जीवन एवं दूरवर्ती शिक्षा की सफलता का मुख्य आधार परामर्श–सेवा ही है। दूरवर्ती शिक्षा में विद्यार्थी के दूर होने के कारण परामर्श–सेवाओं का महत्व और भी बढ़ जाता है। शिक्षण, प्रशासनिक एवं परीक्षा जैसे अनेक मुद्दों पर अवरोध करनें व निर्णय लेने के लिए परामर्श–सेवाएं विद्यार्थी के लिए आवश्यक एवं प्राकृत आवश्यकताएँ बन गयी है। प्रवेश, पाठ्यक्रम, शिक्षण–सामग्री, मूल्यांकन एवं परीक्षा सम्बन्धी अनेक घटकों की दृष्टि से दूरस्थ शिक्षा देने वाले संस्थान को आवश्यक परामर्शीय तंत्र की स्थापना कर निम्नांकित कार्यों को अवश्य रेखांकित करना चाहिए–

1. ऑनलाइन परामर्श एवं सूचना–सेवा संस्थान की स्थापना।
2. अध्ययन केन्द्रों पर वैयक्तिक परामर्श एवं विद्यार्थी सहायता केन्द्रों की स्थापना।
3. मुख्यालय पर केन्द्रीयकृत परामर्श विभाग की स्थापना करना।
4. व्यापक सूचना सामग्री का प्रकाशन एवं वितरण सुनिश्चित करना।
5. रेडियों एवं दूरदर्शन द्वारा समूह–परामर्श सेवाएं स्थापित करना।
6. दक्ष परामर्श दाताओ की परामर्श–सेवाओं की प्रयोग करना।
7. व्यक्तिगत सम्पर्क कक्षाओं का सुनियोजित आयोजन एवं प्रबन्धन करना।
8. उचित पृष्ठपोषणीय तंत्र की स्थापना करना।

परामर्शदाताओ का सशक्तिकरण

इस दूरस्थ शिक्षा पद्धति के अध्यापकों, जिन्हे परामर्शदाता के नाम से जाना जाता है, को उपरोक्त विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः परामर्शदाताओ को इन समस्याओं के हल निकालने में दक्ष करने के लिए तथा इनके कौशलों में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए जिस प्रकार से संयोजकों की बैठक, सेमिनार तथा कार्यशाला का आयोजन किया जाता है उसी प्रकार इन परामर्शदाताओं (अध्यापकों) के लिए भी निम्नलिखित क्षेत्रों में सशक्तिकरण किया जाये–

1. इस अतिरिक्त प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए सम्भाग (जोन) में विशेष संसाधन केन्द्र स्थापित किया जाये।
2. इस प्रशिक्षण को प्रत्येक परामर्शदाता के लिए कम से कम एक सत्र में एक बार अनिवार्य किया जाये।
3. इस प्रशिक्षण को देने के लिए देश–विदेश में कार्यरत दूरस्थ शिक्षा के विषय–विशेषज्ञों को प्रशिक्षण दिलानें के लिए आमंत्रित किया जाये।
4. शिक्षण–अधिगम कार्य में प्रयुक्त होने वाले आवश्यक तकनीकी उपकरणों के प्रयोग सम्बन्धी दक्षता के विकास हेतु बल दिया जाये।
5. अधिगमकर्ताओं की समस्याओं के प्रति संवदेनशीलता विकसित करने तथा उनके समाधान हेतु आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाये।
6. कुछ अभिभावकों को भी परामर्शदाता सशक्तिकरण प्रक्रिया में आमंत्रित किया जाये तथा उनके द्वारा दिये गये उपयुक्त सुझावों को भी समाहित किया जाये।

उपरोक्त सशक्तिकरण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए बैठक, संगोष्ठी, कार्यशाला, समूह–चर्चा, व्याख्यान, संभाषण, आदि प्रविधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

निष्कर्ष

विषयपरक सारांश यह है कि दूरस्थ–शिक्षा तो आज की आवश्यकता एवं कल का भविष्य है। यदि इस दिशा में कुछ विसंगतियाँ दृष्टिगोचर हो भी रही हैं, तो उसका कारण दूरस्थ–शिक्षा की अवधारणा में खामियां नही है, बल्कि उचित नियन्त्रण एवं सुप्रबन्धन का अभाव है। विकास की गति के चलते वैयक्तिकता व निजीकरण को तो नकारा नहीं जा सकता, परिवर्तनों व परिस्थतियों को देखते हुए यह आवश्यक भी है। अतः यदि हमें इस दिशा में कुछ सुधार करना है शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्शीय व्यवस्थाओं को प्रतिस्थापित करना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारत मे विद्यालयी शिक्षा वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताएँ,'' एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 1986.*
2. *कुराहड़े, एम0एस0, ''ओपन एण्ड डिस्टेन्स लर्निंग फॉर ए ब्राइट टुमारो'' यूनिवर्सिटी न्यूज, मई 2009.*
3. *ब्रनाडेट रोबिन्सन, ''दा मैनेजमेन्ट ऑफ क्वालिटी इन ओपन डिस्टेन्स लर्निंग'' एट्थ एनवल क्रान्फ्रेंस ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली, फरवरी 1995.*
4. *यादव, सियाराम, ''दूरवर्ती शिक्षा'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2007.*
5. *के0सुधाराव, ''इन्स्टीट्यूट डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी कान्ट्रिब्यूशन टू हॉयर एण्ड प्रोफेशनल एजूकेशन एण्ड रिसर्च,–'' वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, 2006.*
6. *सिंह, गोविन्द, ''ऑनलाइन शिक्षा यानि घर बैठे विश्वस्तरीय पढ़ाई'', कादम्बिनी, जुलाई 2005.*
7. *उपाध्याय प्रतिभा, ''भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ,'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2005.*
8. *साहू पी0के0, ''ओपेन लर्निंग सिस्टम,'' उप्पल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1994.*
9. *शैक्षिक व व्यवसायिक निर्देशन 2018 एशर्मा आर ए तथा शिखा चौधरी आर लाल बुक डिपो मेरठ*